Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 4 ~ Issue 2 (2016) pp : 30-33
ISSN(Online) : 2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

राजस्थानी चित्रकला में बून्दी चित्रषैली का रेखांकन एवं मेवाडी चित्रण का प्रभाव

मनीषा चौबिसा
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय ,उदयपुर ,राजस्थान

सारांष– संसार की किसी भी कला में सौंदर्यनुभूती जब पूर्ण भाव के साथ अभिव्यक्त होती है तो वह कला सफल होती है। कोइ भी कला स्थान, परिस्थिति एवं कलाकार की कुषलता पर तो निर्भर करती ही है साथ ही अपनी प्राचीन या पूर्व की कला से भी प्रभावित होती है। चित्रकला विभिन्न तत्वों से संयोजित होकर निर्मित होती है जिसमे से एक महत्वपूर्ण तत्व रेखा है। *चियते इति चित्रम* अर्थात चित्रकार अपने आन्तरिक भावों को रेखा के माध्यम से अभिव्यक्त करके नवीन सृजन की ओर अग्रसर होता हैं। जब कलाकार की अभिव्यजना पूर्ण लय, गति ओर सोम्यता से अभिव्यक्त होती है तो रेखांकन मे तीव्रता, प्रखरता और सजीवता उत्पन्न हो जाती है। किसी भी कला की सृजन प्रकिया मे अन्य स्थान की कला का प्रभाव अवष्य रहता है। भारतीय कला की सर्वाधिक विषेषता उसकी समन्वयात्मक प्रवृत्ति रही है। यहॉ भी बून्दी चित्रषैली की अपनी अलग पहचान,मौलिक विषेषताएं एवं महत्व होते हुए भी उस पर पूर्व की मेवाड कलाषैली का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पडता है जिसके प्रमाण पुरासरक्ष्यों मे स्पष्ट देखे जा सकते है फिर चाहे वह अजन्ता का षास्त्रीय चित्रण या तीव्र रेखांकन हो,अपभ्रषं की आखॅ हो या वैष्णव धर्म का प्रभाव हों। इतिहासकारो ने यह माना कि गुहिलवषं के अराध्य एकलिगंजी, जैन तिर्थकरो की तक्षण कला, पोथी चित्रण परम्परा तथा राजपूतो की कलाप्रियता से राजस्थानी चित्रकला का जो स्वरूप उभरकर आया उयका प्रमुख केन्द्र मेदपाट या मेवाड ही रहा। यही कारण है कि यहॉ की अन्य कलाओ की अपनी अलग विषेषता होते हुए भी मेवाडी चित्रषैली सदा प्रेरणा स्रोत रही। बून्दी का रेखांकन भी इसी प्रेरणा से आगे बढा और रागरागिनी, रितुचित्रण, प्रकृति चित्रण मे अपनी कोमलता, ओज, बारिकी और सोम्यता के कारण विष्व प्रसिद्व हुआ। यही कारण है कि बून्दी कला अपनी अलग पहचान रखती हैं।
मुख्य षब्द – भारतीय चित्रकला, बून्दी चित्रषैली ,मेवाडी कला, रेखांकन,

परिचय – सम्पूर्ण कला जगत में भारतीय चित्रकला का अपना विषेष स्थान है। अजन्ता की षास्त्रीय परम्परा का निर्वाहन करने वाली भारतीय चित्रकला में राजस्थानी चित्रकला की अपनी अलग पहचान है। अपनी निजी संस्कृति और सभ्यता का पालन करने वाली इस षैली में पद्रहवीं षताब्दी से कला की जिस धारा को प्रवाहित किया वह कबीर , नानक, रामानन्द, चैतन्य, आदि के भक्ति आन्दोलन से संगीत, चित्र, मूर्ति, वास्तु, नृत्य आदि स्वरूपों में ऑधी के समान फैलती चली गई। वास्तव में पन्द्रहवीं षताब्दी का समय राजस्थानी षैली के लिये पुनरूत्थान का था जिसमें आस पास की अन्य कला एवं संस्कृतियों का प्रभाव भी देखा गया। कलाविद प्रमोदचन्द्र इस तथ्य की पुष्टि करतें है कि 15वीं षताब्दी के आरम्भ में राजस्थानी षैली पर गुजरात अपभ्रषं के अषं देखे जा सकते हैं। कलाविद मजुंलाल, रणछोड लाल मजुमदार भी इस कथन का समर्थन करते हैं। यह पुनरूत्थान दक्षिण राजस्थान के मेवाड से आरम्भ हुआ माना जाता हैं। प्रारम्भिक राजस्थानी षैली को पहनावे जेसे पगढी, जामा, पटका आदि के आधार पर 16वीं षताब्दी तक का माना जाता है परन्तु 17वीं षताब्दी से चित्र षैलियों में विभिन्नता को देखते हुए डा़ आनन्द कुमार स्वामी ने 1996ई में लिखी अपनी पुस्तक राजपूत पेंटिग में राजस्थानी चित्रकला को श्रैत्रिय एवं रियासत के आधार पर विभाजित किया तथा डा़ कार्ल खणडेलावाला, रामगोपाल विजयवर्गी, एवं हरमन गोएडस ने इन्हे सास्ंकृतिक परिवेष के आधार पर चार स्कूलों में विभाजित किया– मेवाड, मारवाड, हाडौति, ढूंढार।

मेवाड षैली – मेवाड षैली के विकास क्रम में यक्ष षैली के प्रधान चित्रकार श्रृंगधर का उल्लेख प्राप्त होता है जो लगभग (646ई) का है। तत्पष्चात नागदा,जगत, कल्याणपुर, चितौड की मूर्तिकला में इसके अंष दिखाई पडने लगे। क्रमिक विकास के आधार पर देखें तो 1060ई का द्रोणाचार्य द्वारा ताडपत्र पर लिखा गया ओधर्नियुक्तिवृत्ति, 1159ई का भद्रभाहु स्वामी का कल्पसूत्र तथा 1212ई का कालकाचार्य कथा के चित्र वर्तमान मे जैसलमैर के जैन भण्डार में सुरक्षित है, प्रारम्भिक सचित्र उदाहरण है। इसी क्रम मे 1260ई का सावगपण्डिक्कम्मणसुक्तचुर्णी गुहिल वषं में रामचन्द्र द्वारा रचित और वर्तमान मे बोस्टन संग्राहलय मे सुरक्षित है तथा 1448ई का मोकल के राज मे रचित सुपासनाचर्रियम के 36 चित्र ज्ञान भण्डार पाटन के संग्राहलय मे सुरक्षित है जो मेवाडी कला को दर्षाते है। मोकल का पुत्र कुम्भा का समय मेवाड की चित्रकला परम्परा का महत्वपूर्ण समय माना जाता है। 15वीं 16वीं षती मे हिन्दू कला का प्रमुख केन्द्र भी इसे ही माना जाता है। 1450ई का कामसूत्र, 15वीं षताब्दी का चौरपचंषिका, तथा 1550ई का बालगोपाल स्तुति इसी समय रचित सचित्र ग्रन्थ हैं जो मेवाडी कला षैली के आधार स्तम्भ है। इस षैली को विषय वस्तु की दृष्टि से देखें तो धार्मिक, पोराणिक, कृष्ण भक्ति के साथ आखेट, नायक नायिका, भागवत, पुराण रामायण आदि के चित्रण अधिक हुए। 1648ई की साहिबदीन, द्वारा रचित श्रीभागवत तथा 1649ई की मनोहर द्वारा रचित रामायण मुख्य है। इसके अतिरिक्त नेषनल म्युजियम नई दिल्ली में

सुरक्षित रागमाला तथा केषवकृत रसिकप्रिया भी यहॉ के प्रसिद्व एवं प्रिय विषय रहे हैं। सूरसागर पदावली और 1650ई का गीतगोविन्द भी मेवाडी कला के श्रेष्ठतम उदाहरण हैं।

मारवाड षैली – 1532ई से 1569ई तक मालव देव द्वारा इस प्रदेष पर षासन किया स्थापना की जिसमें ढोला मारू, भागवत पुराण, रागमाला आदि चित्रावलीयॉ प्रसिद्व हैं। 1638 से 1676ई मे कृष्णचरित्र को आधार बनाकर अनेक चित्र बनाये गये जिनमे बडोदा संग्रहलय की रसिकप्रिया भावभंगिमा एवं संयोजन की दृष्टि से विषेष हैं यहॉ लोक जीवन लोकपरम्परा, लोक गाथाओं जैसै ढोलामारू, उजली जेठवा, मूमल देव, रूपमती बाजबहादुर, जैसै प्रेम प्रसंग विषेष चित्रित हुए जिसमे ठेठ मारवाडीषैली का प्रभाव देखा जा सकता है।

ढूंढारषैली – 1699ई से 1793ई तक कछवाहा वंष के राजपूतष्षासक ढूढार नामक राज्य में स्थित थे अत यह काल कछवाहाषैली या ढूढारषैली के नाम से प्रसिद्व है। कछवाहा क्षेत्र की राजधानी आमेर थी और आमेर के राजा बिहारीमल की मुगलो के साथ मित्रता थी 1589ई से 1614ई मे राजपुतो और मुगलो मे विवाह सम्बन्ध स्थपित होने पर यहॉ की कला षैली पर मुगल प्रभाव दिखाई देने लगा। 17वीं षताब्दी के प्रारम्भिक काल में राजा भारमल की छतरी पर बने भित्ति चित्रों से आमेर के प्रारम्भिक चित्रण को देखा जा सकता है। 1621–67ई राजा जयसिंग और 1699–1743ई महाराजा सवाईजयसिंह के समय जयपुर नगर एंव ढूढार षैली को नवीन पहचान मिली जिसपर मारवाडी, मेवाडी, अपभ्रष और दक्षिण की कला का प्रभाव भी देखा जाने लगा ।

हाडौति षैली – हाडौति की कलाषैली मे बून्दी का प्रमुख स्थान है या यो कहे कि हाडौति की कला का आरम्भ बून्दी षैली से ही हुआ है तो अतिष्योक्ति नही होगी। बून्दी राज्य हाडा वंष के अर्न्तगत आता है जो दक्षिण मे मालवा ,उत्तर मे जयपुर ,तथा पष्चिम मे मेवाड से घिरा है। वास्तव मे बून्दी कोटा पूर्व मे मेवाड का ही अंग थे 1557–1585 ई मे राव सुरजन सिहं ने मेवाडी अधीनता त्याग कर मुगल के अधीन हो रणथम्बोर के किले मे आत्मसर्मपण कर दिया। इनका पौत्र राव रतन सिहं 1607–1631ई ने जहॉगीर दरबार मे सर बुलन्दराय और रामराज की उपाधी प्राप्त की अत बून्दी कलम पर मुगल एवं दक्षिण की कला का स्पष्ट प्रभाव भी देखा जा सकता है।

बून्दी चित्रषैली का विकास – इस षैली का आरम्भ 1605–1625 ई के मध्य ही प्रारम्भ हो जाता है। इस समय की तीन प्रमुख चित्रावलीयॉ है जो बून्दी षैली को अपनी पहचान देती है। सबसे प्रमुख गीतगोविन्द चित्रावली है जो रेखांकन (स्याह कलम) के रूप मे भारत कला भवन वाराणसी में विद्यमान है। इसी के समकक्ष राग दीपक का चित्र है जो भारत कला भवन की रागमाला से मेल खाता है तथा तीसरा प्रमुख चित्र जो रागिनी भैरवी का है– इलाहबाद के म्युजियम मे सुरक्षित है। उपयुक्त तीनो चित्र 1625ई मे बून्दी के प्रसिद्व चित्र है जिसमे चटकीले रंग, प्रकृति चित्रण, और रेखांकन मे बारीकि है। 1605ई की चावण्ड रागमाला को भी इससे मिलता जुलता बताया है। 17वीं षताब्दी मे मेवाड की प्रषाखा के रूप मे अपनी मूल विषेषताओ के साथ बून्दी षैली का विकास हुआ। इसके प्रमुख चित्रो मे ग्रीष्म मे हाथी, कॉटा निकालती स्त्री, स्नान का दृष्य 1775ई तथा गीतगोविन्द उच्चकोटी के है राधा कृष्ण और नायक नायिका के चित्रो मे भाव भंगिमा रंगो की चमक तथा संयोजन अत्यन्त आर्कषक है। राग रागिनी, कृष्ण लीला और भागवत पुराण, दरबारी दृष्य तीज की सवारी आदि यहॉ के प्रमुख विषय रहे है। चमकदार हाषिये, स्वर्ण रेखांकन, सपाट पृष्टभूमि तथा कोणात्मक संयोजन इस षैली को अन्यों से पृथक बनाती है।

1 चित्रण मे पूर्ण छाया प्रकाष एवं गोलाई देखी जा सकती है ।

2 चटकीले, सपाट एवं गहरे रंगो के प्रयोग से यह कलाषैली अपनी अलग पहचान बनाये हुए है।लाल सफेद हरा पीला रगों की कई रंगते तथा सुवर्णरेखांकन इसकी रंग विषेषता है।

3 गोल मुखाकृति, पतले होट ढलवा ललाट छोटी पतली नासिका ,गोल चेहरा छोटा वक्ष,तथा नितम्ब ,रत्ताभ हथेली यहां की आकृतियो मे देखी जा सकती है।

4 मानवाकृतियों के चेहरे लाल या हल्के गुलाबी रंग से बनाये गये हैतथा पुरूषाकृतियॉ मे चौडी छाती गोल मुख ,दाढी मुछॅ, लम्बा जामा तथा चुन्नरवाला पायजामा बनाया गया है।

5 प्रकृति चित्रण ,पषु पक्षी ,बन्दर ,मोर ,आदि का अदभुद चित्रण किया गया है । मनोरम प्राकृतिक दृष्य कदली ,ताड आम के वृक्षों के झुरमुट बनाने मे यहॉ के कलाकार सिद्वहस्त थे । 6 पृष्टभूमि मे महल अटालिका दरवाजे बादरवाल छतरियॉ गुम्बद जालियॉ आदी का त्रिआयामी संयोजन सीधे एवं कोणीय रूप मे किया है।

7 यहॉ चमकदार हाषियों पर स्वर्णरेखा तथा गहरी सपाट पृष्टभूमि पर पीला और लाल मुख्य रगं तथा नीले और सफेद को प्रकृति के साथ संयोजित करके गहरे और हल्की पृष्ट भूमि के साथ विभिन्नता से चित्रित किया गया है नीला लाजवर्दी को स्वर्ण के साथ मिलाकर प्रभावषाली चित्रण किया गया है।

8 चित्रण मे पतले अधर ,अर्द्ध विकसित नैत्र गोलाई लिये हुए ,वक्ष कंचुकि से कसा हुआ ,कटीक्षीण , उदर खिंचा हुआ कम लम्बाई किन्तु अत्यन्त आकर्षक अदभुद सौंदर्य से भाव भंगिमा एवं षारिरिक सौष्टव को चित्रित किया गया है ।

बून्दी षैली के प्रमुख प्रतिनिधि चित्र और उनका रेखांकन –

गीत गोविन्द – बून्दी षैली मे बनाये गये प्रमुख प्रतिनिधि चित्रो मे केषव दास के काव्य पर आधारित रसिक प्रिया 1591ई ओरछा के राजा इन्द्रजीत द्वारा चित्रित करवाया गया ,मुख्य हैं रसिकप्रिया के अधिकांष चित्र राधा कृष्ण के प्रेम पर

आधरित हे जिसे कलाकार ने गीतगोविन्द नामक काव्य मे संकलित किया है । यह काव्य कलाकार की कल्पना षक्ति और राधा कृष्ण के लौकिक प्रेम को आलौकिक स्वरूप प्रदान करते हुए चित्रित किया गया है यह चित्रावली वर्तमान मे भारतकला भवन बनारस मे सुरक्षित है जो ततकालीन समय का प्रतिनिधि चित्र है। सम्पूर्ण चित्रतल को रेखांकन द्वारा विभिन्न भागो मे विभाजित किया गया है। पृष्टभूमि मे वृक्षों के रेखांकन मात्र से ही चित्रतल को दो भागो मे बाटां गया है। मोटी व बारिक रेखाओं द्वारा आकृतियो मे विभिन्न भाव, लचक तथा सोम्यता देखी जा सकती है ज्यामितिय रेखा द्वारा भवन अटालिका गुम्बद तथा कोणीय रेखा द्वारा छाया प्रकाष तथा त्रिआयामी संयोजन किया गया है। बाह्य रेखांकन से ही काव्य मे निहित भावो को अभिव्यंजना द्वारा प्रस्तुत किया गया हैं।

रागिनी भैरवी 1610–25ई – रागिनी भैरवी का यह चित्र रागमाला का ही अषं है जिसमे नायिका को भैरव नाथ की अराधना करते हुए दर्षाया गया है यह चित्र विक्टोरिया अलर्बट म्युजियम मे सुरक्षित है, कलात्मक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

बारहमासा 1660ई – बारहमासा श्रृखंला से चैत्र मास का यह चित्र रेखांकन की दृष्टि से बून्दी ष्षैली का उत्तम चित्र है राज्य संग्रहालय लखनउ मे सुरक्षित इस चित्र मे कलात्मकता ज्यामितियता तथा लयात्मकता के तीन स्पष्ट स्तर देखे जा सकते है। सम्पूर्ण संयोजन मे खडी व आडी सुदृड रेखाओ का प्रयोग है फिर भी नारी आकृति की गोलाइ व सोम्यता देखते ही बनती है । हिन्दू तिथियो के अनुसार वर्षभर मे गिने जाने वाली ऋतुओ मे बारहमासा के अर्न्तगत तेरह जोडे , प्रत्येक मे एक दोहा तथा बारह चौपाइ होती है। चैत्र से प्रारम्भ होकर फाल्गुन तक बारह महीनो को इसी भाति बून्दी ष्षैली मे अत्यन्त रोचकता और भावप्रवणता के, साथ चित्रित किया गया है।

विलावल रागिनी – 1680ई मे रागमाला के अर्तगत ही इस रागिनी का चित्रण बून्दी ष्षैली की रेखांकन का उत्तम नमुना हैं। प्रेम का प्रतीक यह चित्र भाव कल्पना और माधुर्य का संगम है। आकृति की गोलाइ चित्रण का कोणात्मक पक्ष तथा लयात्मक भावभंगिमा के कारण यह चित्र विष्व विख्यात है।

इसके अतिरिक्त 1700ई का नाता रागिनी का चित्र जो सूर्य की अराधना करते हुए राग दीपक मे गायी जाती है का रेखांकन भी अपनी गतीषीलता और प्रखरता के लिये प्रसिद्ध है। 1760 ई का कनीराम का व्यक्ति चित्र, 1800ई का षिव पावर्ती, 1840 का सोनी महीवाल तथा 1890ई का युद्ध का प्रारूप कलाकार की कुषलता को दर्षाते है। इस प्रकार बून्दी षैली के चित्रों मे रेखांकन को आकृति संयोजन के सैधान्तिक पक्ष को मुख्य आधार बनाकर चित्रण किया गया जो सम्पूर्ण चित्रण को बिखराव से बचाता हैं।

बून्दी षैली की चित्रकला पर मेवाडी कला षैली का प्रभाव – बून्दी के आरम्भिक चित्रो पर मेवाडी कला का प्रभाव देखा जा सकता है क्योंकि बून्दी और कोटा आरम्भ मे मेवाड राज्य के अधीन थे तथा बाद मे मुगलो के अधीन हुए अत इस कलाषैली के आरम्भिक चित्रो पर पहले मेवाड का और बाद मे मुगल षैली का प्रभाव पडा ।

1. इस तथ्य की पुष्टि माइलो क्वीलोबीच की पुस्तक राजपूत पेंटिग एट बून्दी एण्ड कोटा से की जा सकती हैजिसमे 16वीं ष्षताब्दी तक के चित्रों के लक्षण मेवाडी कला षैली के समान है। उदाहरण के लिये पत्र सं. 141/3 मेचित्रित दो स्त्रीयों का उल्लेख है जिनकी भंगिमा, वेषभूषा, कदकाठी सभी मेवाडी प्रभाव से युक्त है। स्त्री आकृति के हावभाव ललाट, चौडे कन्धे, भारी नितम्ब आदी मेवाडी प्रभाव लिये हुए दिखाइ पडते है।

2. 1570ई मेवाड मे रचित गीतगोविन्द तथा भारत कला भवन वाराणसी मे स्थित गीतगोविन्द मे आकृतियो की बनावट एक जैसी हैं। इसी प्रकार 1598ई की श्रीभागवत और रागमाला से राग दीपक मे मेवाडी कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। चित्रण मे स्त्री पुरूष की आकृति मेवाड षैली जैसी और पृष्टभूमि तथा प्राकृतिक दृष्य बून्दी षैली को दर्षाते है।

3. इसी प्रकार 1625 ई रागिनी भैरवी का चित्र गीतगोविन्द और रागमाला से मेल खाता है। इस चित्र मे रंग योजना तथा पषुपक्षी के चित्रण मे बून्दी षैली की विषेषता तथा स्त्री पुरूष मे मेवाडी प्रभाव दिखाइ देता है।

4. इस विषय मे एक तर्क यह भी है कि राणा कुम्भा 1433–1468 ई के समय भीकम चन्द द्वारा रचित रसिक काष्टक मे अंकित प्राकृतिक दृष्य बून्दी षैली से साम्य रखते है जबकि राणा कुम्भा मेवाड के षासक थे। ऐसा ही एक उदाहरण कार्लखण्डालवाला ने स्नान करती स्त्री के चित्र का दिया जिसमे दोनो ही षैलीयो का सामन्जस्य है।

5. बून्दी पर मेवाडी चित्रो के प्रभाव को इससे भी बल मिला कि आरमिभक राजस्थानी के चित्रो पर वैष्णव भक्ति का जो प्रभाव था वही वल्लभ संप्रदाय की प्रधानता बून्दी षैली के चित्र विषयों मे भी विद्धमान थीं क्योकि कृष्ण लीला और राधा कृष्ण दोनो ही षैलियो के प्रिय विषय रहे।

6 एक महत्वपूर्ण कारण यह भी माना जाता है कि बून्दी षैली के मुख्य कलाकार सुरजन ,अहमद ,रामलाल ,साधुराम आदी जिन ठीकानेदारो या जमीदारो के अधीन थे वे सभी मेवाड के आधिपत्य मे थे अत: कलाकारो ने जो भी बनाया उस पर अपने आकाओ का प्रभाव अवष्य रहा होगा ।

निष्कर्ष –इस प्रकार मेवाड एंव बून्दी की कलाषैलियो ने एक दूसरे को प्रभावित किया । बून्दी कलम ने मेवाड की छॉव मे उत्रोतर वृद्धि की। मेवाड षैली का उर्जायुक्त रेखांकन और बून्दी की आहरिक रेखाओं ने चित्रण मे लहरदार व गोलाकार प्रभाव उत्पन्न किया। श्री रामगोपाल विजयवर्गी ने लिखा– बून्दी की चित्रकला उन षास्त्रीय परम्पराओ की लिपिबद्व प्रषस्थि है जिसके मूल मे कल्पना की उर्वर और तीव्र अनुभूतियॉ संजोए हुए है केवल रेखाओं द्वारा रस को उजागर करना कौषल है, चमत्कार है। यहॉ के रेखाचित्र रगों की सहायता भी नही चाहते, वे रेखाओं मे ही बोल उठते है और अपने अर्थ का परिचय देते है। रेखाओ से ही अभ्यिक्ति व प्रस्तुतिकरण कर लेते ळें

संदर्भ –

- जगदीष सिहं गहलोत –राजपुताने का इतिहास ,वालयुम 1 ,पृष्ट सं 1,2
- आनन्द कुमार स्वामी – राजपूत पेंटिग, पृष्ट सं 2–3
- रायॅ कृष्ण दास –भारत की चित्रकला, 591
- कार्ल खण्डेलावाला एण्ड मोतीचन्द्र –न्यु डाकोमेन्ट आफॅ पेन्टिंग ,पृष्ट सं 75
- वाचस्पति गैरोला –भारतीय चित्रकला – पृष्ट सं 153 1993ई
- डॉ. जयसिंग नीरज –राजस्थानी चित्रकला – पृष्ट सं 38,39,40,41, 99
- माइलोक्लीवलोबीच – राजपूत पेंटिग एट बून्दी एण्ड कोटा – पृष्ट सं 91
- राजस्थनी चित्रकला –रामगोपालविजयवर्गी – पृष्ट सं 150, 153 ,158